1. आंतरिक प्रभाव क्षेत्र / ग्रामीण नगरीय उपांत (Internal Influence Area/Rural-Urban Fringe)

Rural Urban Fringe

ग्रामीण नगरीय उपांत वह भौगोलिक क्षेत्र है, जो नगर की प्रशासनिक सीमा के बाहर नगरीय प्रभाव से विकसित होता है। इस शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम T.L. Smith ने 1937 ई0 में किया था। लेकिन उसके पूर्व भी ऐसे उपांत क्षेत्र का अध्ययन वान थ्यूनेन ने कृषि स्थानीयकरण एवं वर्गेस ने संकेन्द्रीय वलय सिद्धान्त में किया था। यह वह क्षेत्र है, जो नगर के प्रशासनिक सीमा के बाहर होता है। अर्थात यह कानूनी दृष्टि से ग्रामीण है, लेकिन कार्यिक एवं व्यवहारिक दृष्टि से यह नगर जैसा प्रतीत होता है। वेहरविन ने भी इस संदर्भ में महत्वपूर्ण विचार दिए थे।

इसके विकास के कई कारण होते है–

1. नगरीय जनसंख्या में विस्फोटक स्थिति के बाद बड़ी संख्या में लोग नगर को छोड़कर स्वच्छ वातावरण के लिए नगर के वाह्य प्रदेश में अवस्थित होने लगते है।
2. नगर के मलिन बस्तियों में वृद्वि और वातावारणीय असंतुलन के कारण भी बड़ी संख्या में लोग वाह्य प्रदेश में वसने लगते है।
3. नगरीय भूमि में मूल्य और किराये में वृद्वि होने के कारण भी बड़ी संख्या में लोग यहां रहते है। भारतीय नगरों के उपांत क्षेत्र में बड़ी संख्या में कम आय वर्ग के लोग रहते है। उसका प्रमुख कारण भारतीय समाज का भूमि के प्रति भावनात्मक लगाव है। कम आय वाले लोग शहर में भूमि नहीं खरीद सकते, अतः वाह्य क्षेत्र में भूमि खरीद कर बस जाते है।

ग्रामीण नगरीय उपांत की विशेषताएं–

ग्रामीण नगरीय उपांत में नगर से आने वाले परिवारों के अतिरिक्त वे समुदाय भी पाये जाते हे, जो इस प्रदेश में अपनी पैतृक भूमि के कारण रहते है। यह प्रवृति विकसित एवं विकासशील देश दोनो में है। लेकिन गुणात्मक दृष्टि से विकसित एवं विकासशील देशों के ग्रामीण उपांत की विशेषताओं में भिन्नता पाई जाती है।

विकसित देशों का उपांत क्षेत्र

विकसित देशों के उपांत का अध्ययन करते हुए R.N. Patil (1965) ने उसकी निम्नलिखित विशेषताएं बतलायी हैं–

1. निर्मित क्षेत्रों में विलगाव (Segregation) होता है। अर्थात यहां निर्मित क्षेत्र लागातार अवस्थित नहीं होते है, बल्कि कार्यिक विशेषता के आधार पर वे एक दूसरे से भिन्न होते है। समान्यतः दो निर्मित कार्यक्षेत्र के बीच गहन वाणिज्यिक कृषि क्षेत्र होता है।

2. चयनित जनसंख्या स्थानान्तरण नगरीय प्रदेश से होता है, अर्थात नगर से सभी आय वर्ग के लोग यहां नही आते बल्कि उच्च आय वर्ग के लोगों की प्रधानता होती है। उसका परिणाम यह होता है, कि नगर के उपांत क्षेत्र में अधिकतर अधिवासीय मकान उच्च कोटि के होते है। सिर्फ पूराने गांव ही निर्माण की दृष्टि से अस्तरित होते है।

3. यह अभिगमन का क्षेत्र होता है, यहां रहने वाले लोग आर्थिक एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोण से नगर पर निर्भर करते है। पुनः नगर भी अनेक कार्यो के लिए उस प्रदेश पर निर्भर करते हैं अतः नगर एवं उपांत के बीच सतत कार्यिक अन्तराकर्षण विकसित हो जाता है, और अभिगमन क्रिया ही उसे कार्यिक रूप देती हैं

4. उपांत प्रदेश ग्रामीण एवं नगरीय संस्कृति का मिश्रण क्षेत्र होता है, क्योंकि यहां एक तरफ जहां उच्च स्तरीय अधिवासीय मकान होते है, वही दूसरी तरफ ग्रामीण बस्ती भी उस प्रदेश में दृष्टिगत होती है। कृषि एवं दुग्ध कार्य की भी प्रधानता होती हैं, अतः उसे उचित ही सांस्कृतिक मिश्रण का क्षेत्र कहा जाता है।

विकासशील देशों का उपांत क्षेत्र

विकासशील देशों के ग्रामीण–नगरीय उपांत में ये सारी परिस्थितियां रहती है, लेकिन निर्मित क्षेत्रों में विलगाव का सिद्धांत लागू नहीं होता है। पुनः विकासशील देशों में लगभग सारी आयवर्ग की जनसंख्या उपांत क्षेत्र में रहती है। वस्तुतः यह एक अनियोजित प्रदेश होता है, लेकिन विकसित देशों के ही समान ये आर्थिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से केन्द्रीय नगर पर निर्भर करते है। भारतीय ग्रामीण नगरीय उपांत का अध्ययन कई भूगोलवेत्ताओं ने किया है।

1961 ई0 में डा. उजागर सिंह ने इलाहाबाद के उपांत का अध्ययन किया तथा उसे एक ऐसा प्रदेश बताया कि, जिसके निर्मित क्षेत्र में लगातार वृद्वि होते रहते है। कृषि भूउपयोग में कमी आती हैं। भूमि मूल्य एवं किराये में लगातार वृद्वि होते रहती है।

उस संदर्भ में **दिल्ली महानगर के उपांत का अध्ययन सुदेश नागिया द्वारा 1976 ई0 में किया** गया। उनके कार्य को मान्यता है। वस्तुतः भारत के सभी महानगरों के उपांत क्षेत्र की यह विशेषता है। सुदेश नागिया के अनुसार दिल्ली महानगर के उपांत में निम्नलिखित विशेषताएं समान्य रूप से पाई जाती है।

1. मलीन वस्तियों का विस्तार
2. मिश्रित भू–उपयोग
3. कृषि भूमि पर जनसंख्या का दबाब, जिसके कारण भूमि के मूल्य में वृद्वि तथा गहन वाणिज्यिक कृषि को प्रोत्साहन।
4. समान्य नगरीय सुविधाओं का अभाव – परिवहन, जल निकास, बिजली की कमी की समस्या।
5. अधिवासीय निर्मित क्षेत्रों का अनियोजित वितरण। यह वितरण विलगाव के नियमों के अनुरूप नहीं है।
6. यह ग्रामीण नगरीय संस्कृति के मिश्रण का क्षेत्र है।

अतः उपर के विश्लेषणों से यह स्पष्ट होता है कि विकसित देशों के उपांत में नियोजन के कुछ मौलिक सिद्धान्तों के अनुरूप निर्मित क्षेत्रों का विकास हुआ है, जबकि विकासशील देशों के उपांत में नियोजन के नियमों का पालन नहीं होने के कारण ये पूर्ण विकास के पूर्व ही मलिन बस्तियां में बदल जाते है। इसी समस्या को ध्यान में रखकर भारत जैसे देश के नगर नियोजन में उपांत प्रदेश को मास्टर प्लान का अंग बना लिया गया है। वस्तुतः उपांत प्रदेश के नियोजन से नगर एवं उपांत के कार्यिक अन्तराकषर्ण में वृद्वि हो सकती है तथा वे एक दूसरे के पूरक के रूप मे कार्य कर सकते है।